सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स स्कूल

एडजेसेंट नवनीति अपार्टमेंट आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-	विषय-हिन्दी	पाठ:1-प्रकृति

<u>बोलकर</u>

(क) प्रकृति कुछ पाठ पढ़ाती है।

(ख) शिखर बनने के लिए शैल यानी पर्वत कहता है।

(ग) हमें प्रकृति मार्ग दिखलाती है।

(घ) अकड़ नहीं टिक पाती है।

<u>लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-</u>

(क) निरंतर चलने की प्रेरणा देते हुए नदी कहती है कि निरंतर बहते रहो, जहाँ हो वहाँ पड़े मत रहो।

(ख) पर्वत ऊँचे बनने की प्रेरणा दे रहे हैं। वे हमें शिखर बनकर खूब ऊपर तनने की प्रेरणा दे रहे हैं। जिस प्रकार शिखर ठोस आधार लेकर ऊँचा तना हुआ है, उसी तरह वह हमें भी मजबूती से तनने की प्रेरणा दे रहा है।

(ग) वृक्षों से हमें खूब फलने-फूलने की प्रेरणा मिलती है तथा सदा दान के पथ पर चलने की सीख मिलती है।

(घ) सूर्य चंद्रमा की यह विशेषताएँ हैं कि वे हमेशा चमकते दमकते रहते हैं। वे हमें अंधेरे से संग्राम करके अपना प्रकाश फैलाने की सीख दे रहे हैं।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-</u>

(क) कविता में नदी के बहने को जीवन से इस प्रकार जोड़ा गया है कि जीवन चलने का नाम है क्योंकि रुकना अर्थात मृत्यु है। जिस प्रकार नदी निरंतर चलकर अपने गंतव्य यानी समुद्र की ओर जाती है, वैसे ही वह हमें अपनी मंजिल की ओर जाने की सीख दे रही है।

(ख) वृक्षों के फलने से अभिप्राय है जीवन में खूब उन्नति करना और छाया देने से तात्पर्य है लोगों के दुख-तकलीफ़ को कम करना। जिस प्रकार वृक्ष लोगों को धूप से बचाता है, वैसे ही हमें भी लोगों के लिए छाया बन जाना चाहिए अर्थात् उनके कष्टों को दूर करने में अपना सहयोग देना चाहिए।

(ग) जिस तरह शिखर तना रहता है, वैसे ही हमें भी उससे ऊँचे उठने का और तनकर रहने का गुण सीखना चाहिए। तनकर रहने का अर्थ है- स्वाभिमान से जीना, किसी के आगे न झुकना।

(घ) हमारी दृष्टि में अच्छे काम करने वाले लोगों की याद ही इसलिए रह जाती होगी क्योंकि वे मरकर भी अपने अच्छे कार्यों से लोगों की यादों में अमर हो जाते हैं। वे अपने अच्छे कार्यों की छाप हमेशा के लिए छोड़ जाते हैं।

<u>पठित पद्यांश</u>

(क) श्री कृष्ण सरल, प्रकृति

(ख) कवि अपने गंतव्य यानी मंजिल की ओर जाने की प्रेरणा दे रहा है।

(ग) कवि के अनुसार चलना ही जीवन है।

(घ) कवि ने रुकने को या अगति को मृत्यु माना है।